Peer Reviewed

ISSN 2319-8648

Indexed (SJIF)

Impact Factor 7.139

Current Global Reviewer

UGC Approved International Refereed Research Journal Registered & Recognized
Higher Education For All Subjects & All Languages

Editor in Chief
Mr. Arun B. Godam

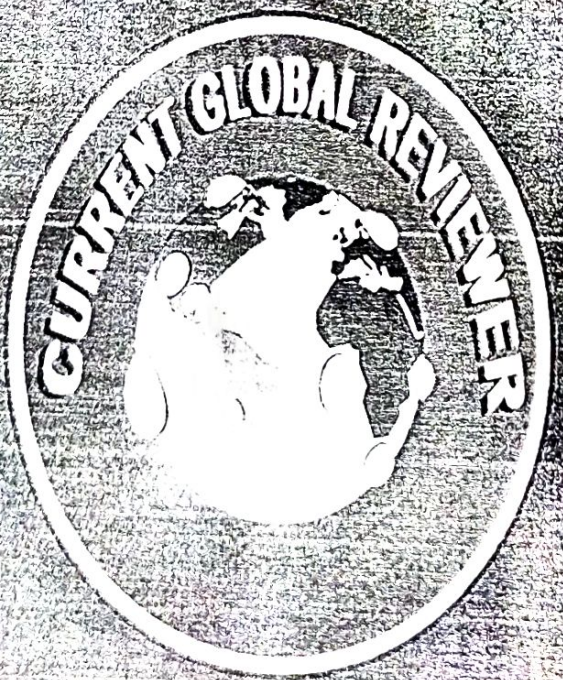

Ingle सर.

CURRENT GLOBAL REVIEWER

Issue XXV (25) , Vol. I Dec. 2020 | Peer Reviewed SJIF Impact factor | ISSN : 2319 - 8648 Impact Factor : 7.139

Impact Factor – 7.139 ISSN – 2319-8648

Curren Global Reviewer

Peer Reviewed Multidisciplinary International Research Journal

PEER REVIEWED & INDEXED JOURNAL

Dec. 20 Issue- 25 Vol. I

Chief Editor

Mr. Arun B. Godam

Shaurya Publication , Latur

CURRENT GLOBAL REVIEWER

Issue XXV (25) , Vol. I | Peer Reviewed | ISSN : 2319 - 8648
Dec. 2020 | SJIF Impact factor | Impact Factor : 7.139

Index

1. Impact of Fruits And Vegetables In Covid-19 — 5
Deepak Karan, Vishwa Nath and Ravi Karan

2. Discovery and Remote Access Tools & Services in Libraries — 9
Devidas Eknathrao Dadpe

3. 'Effect of sugar mill effluent on water quality of Bore-well' — 14
Dr. A. V. Gaikwad

4. Administration of Green audit in Vasant Mahavidyalaya ,Kaij [M.S.] — 16
Hirve Babasaheb J.

5. Spirituality and Pandemic like Covid -19 — 20
Sonia Uttam Bairagi

6. Importance of Mahatma Gandhiji's Views on Sanitation — 26
Dr. Pandit Mahadeo Lawand

7. GST In India — 29
Dr. Pratap J. Phalphale   Ananda Ramrao Sarange

8. साठोत्तरी हिंदी महिला कहानीकार और स्त्री विमर्श — 32
प्रा.डॉ. एकलारे चंद्रकांत नरसप्पा

9. मनरेगाच्या अंमलबजावणीत ग्रामसभेची भूमिका — 35
प्रा.सुनिल काशिराम राठोड , डॉ.व्ही.डी. गायकवाड

10. जॉन रॉल्साची 'न्यायाची संकल्पना' — 40
डॉ. संजय मारोतीराव कोनाळे

11. मीरा कांत कृत 'अंत हाजीर हो' नाटक में स्त्री जीवन — 44
प्रा. डॉ एमेकर एन.जी.

12. 'कोरोना काळातील व्यायाम' — 46
प्रा. डॉ. भास्कर माने

13. 'कोरोना काळातील कविता' — 49
प्रा. डॉ. गोविंद काळे

14. आदिवासी जनजाति एक परिदृश्य — 55
डॉ. अमिता पाण्डेय

15. चौथीभिंत : रूपबंध आणि सांस्कृतिकता — 63
डॉ.सी.डी. कांबळे

16. अण्णाभाऊ साठे यांचे लोक संगीतातील योगदान — 67
प्रा. चंद्रशेखर हि. मेंडोले

17. कश्मीर प्रश्न और डॉ.बाबासाहब अम्बेडकर — 70
डॉ मा.ना.गायकवाड

18. राष्ट्रीय एकात्मतेसाठी संगीताची भूमिका — 76
प्रा. ज्ञानेश्वर बोपीलवार

19. हिमांशू जोशी के कंथासाहित्य में सामाजिक व्यवस्था मे शोषण का चित्रण — 78
प्रा.इंगळे अमोल रमेश

20. Anna Bhau Sathe: A Humanitarian Littérateur — 81
Dr. Ramesh Achyutrao Landage

21. Present Education Scenario And Awareness — 90
Dr.Narendra Kumar Moharana

CURRENT GLOBAL REVIEWER

Issue XXV (25) , Vol. I | Peer Reviewed | ISSN : 2319 - 8648
Dec. 2020 | SJIF Impact factor | Impact Factor : 7.139

हिमांशू जोशी के कथासाहित्य में सामाजिक व्यवस्था में शोषण का चित्रण

प्रा.इंगळे अमोल रमेश
हिंदी विभागाध्यक्ष ,शिवनेरी महाविदयालय,शिरुर अनंतपाळ, जि.लातूर

प्रस्तावना :

साहित्य समाज हा दर्पण माना जाता है क्योंकि साहित्य मे समाज का प्रतिबिंब दिखायी पडता है ।साथ ही साहित्य समाज को नई दिषा भी देता है। किसी भी देष की सम्यता संस्कृति का इतिहास उस देष के साहित्य से ज्ञात होता है । जिस देष का साहित्य समृध्द हो उस देश को सम्य, संस्कृत माना जाता है । मनुष्य के जीवन का मूलाधार साहित्य है । मनुष्य इससे भिन्न नहीं हो सकता । उपन्यास सम्राट प्रेमचंदजी ने साहित्य को जीवन का आधार माना है । प्रेमचंदजी लिखते है की, "साहित्य का आधार जीवन है, इसी नीव पर साहित्य की दीवार खडी होती है ।" 1 अर्थात साहित्य वह है जो साहित्यकार समाज में देखता है और उसे सोच समझकर समाज होत की दृष्टी से लिखता है वही साहित्य है । साहित्य शब्द का प्रयोग 7 वी, 8 वी शताब्दी में मिलता है । इससे पूर्व साहित्य के लिए कान्य शब्द का प्रयोग किया जाता था

मनुष्य सामाजिक प्राणी है साथ हीवह भावना प्रधान प्राणी भी है । मनुष्य अपनी भावनाओं को अभिव्यक्त करने के लिए साहित्य का उपयोग करता है । इसीलिए मनुष्य और साहित्य अभिन्न है । साहित्य में समाज का वास्तविक चित्रण होता है । समाज की वास्तकि घटनाओं को अपनी कल्पना के रंगो मे सजाकर साहित्यकार अपनी रचना में प्रस्तुत करता है । इस संबंध में जैनेंद्रकुमार अपने निबंध संग्रह "साहित्य का श्रेय और प्रेम" में लिखने है कि, "साहित्य समाज का दर्पण ही नहीं नियम भी है ।वह वर्तमान को ही प्रतिबिंबित नहीं करता भविष्य की सम्भावनाओं को भी उजागर करता है।"2

साहित्य और समाज के अटूट संबंध के विषय में डॉ.रामविलास शर्मा लिखते है कि,"साहित्य का पौंध चूंकि हमारे सामाजिक जीवन की धरती पर ही उगता है, अतः साहित्य का इतिहास सामाजिक इतिहास से अलग न होकर उसका अंग होता है।" 3

परिमाषा

साहित्य शब्द की परिमाषा लिखने हुए हिंदी साहित्य कोश के रचयिताओं ने लिखा है। "साहित्य, सहित+यत प्रत्यय अर्थात साहित्य का अर्थ है, शब्द और अर्थ का यथावत सहभाव, साथ होना इस प्रकार सार्थक शब्द मात्र का नाम साहित्य है।" 4

संस्कृत विद्वानों ने सहिते न भावः स साहित्यम कहकर स्पष्ठ किया है कि, जिसमें साथ होने का भाव है वही साहित्य है साहित्य दर्पण में लिखा है साहित्य वह शास्त्र है, जिसमें भावना और भावुकता की पद–पद पर आवश्यकता है।" 5

'समाज' शब्द का प्रयोग आमतौर पर मानव समुह के लिए किया जाता है लेकिन इससे समाज शब्द का वास्तविक रुप स्पष्ठ नहीं होता । क्योंकि समाज को बनाने में भी कुछ तत्व सहायक होते है इनके बिना समाज का निर्माण नहीं होता समाज में होनेवाली निरंतर विकास की प्रकिया की बदौलत समाज बदलता रहता है । इस गतिशील समाज में हरदिन अनेक परिवर्तन हो रहे है । जिससे समाज विघटित होता है तथा विघटित समाज अनेक समस्याओं को जन्म देता है । आज हमारे देश में दहेज प्रथा, मदयपान, अस्पृश्यता, बेरोजगारी, बेकारी, भ्रष्टाचार, बढती हुयी जनसंख्या, प्रदुषण, वेश्यावृत्ती, दरिद्रता, भूकमरी, भिक्षावृत्ती, आतंकवाद, अंधविश्वास, अनपढता जैसी समस्याए है जो देश को खोकला बना रही है ।

Issue XXV (25) , Vol. I | Peer Reviewed | ISSN : 2319 - 8648
Dec. 2020 | SJIF Impact factor | Impact Factor : 7.139

हिमांशु जोशी जी ने अपने कथा साहित्य में सामाजिक परिप्रेक्ष्य में बदलते जीवन मुल्यों को स्थान दिया है । हिमांशु जोशी जी की तरपन कहानी मे एक गरीब असहाय विधवा मधुलि के प्रति पुरे समाज की अमानुषिक स्वार्थ लिप्सा का चित्रण हुआ है । एक और मासूम दूर पिते बच्चे दुसरी ओर धर्म के ठेकेदार ब्राहमण और पुरा समाज जो असहाय विधवा के साथ मौखिक सहानुभूति तो जानता है । पर मदद के नाम पर कुछ भी करने के लिए तयार नहीं है ।मधुलि का पति एक मजदुर था । एक दिन उसकी चटटान फटने से अचानक मृत्यु होती जाती है । मधुलि के तीन मासूम दूध पिते बच्चे है । ऐसे में अंत समय मे उसके पति को कफन तक नहीं मिलता । आज उसके पति की तेरहवी है । पिंडदान करवाने के लिए ब्राहमणों की भीड लगी हुयी है मगर मधुलि के पास इतना सामर्थ्य कहॉ की ब्राहमणों को दान देकर पिंडदान करे । पहले ही उसके पास कुछ नहीं ऐसे में उसके भूखे बच्चे है । गॉव वालों से भीख मॉगती है, ऑचल पसारती है मगर कोई भी उसे मदद करने के लिए तैयार नहीं । दरिद्रता में भी वह अपने पति का पिंडदान करना चाहती है । इसिलीए वह ब्राहमणों के आगे अपने दरिद्रता, समर्थता प्रकट करते हुए कहती है बामन ज्यूं गरुड पुराण की मेरी सामर्थ्य कहॉ यह सब तो बडे भगवानों के भाग मे होता है, जो फूलों के डोले पर चढकर स्वरग जाते है । मेरे पास तो जो–निल बहाने को भी पैसे नही । गो–ग्रास के लिए आटा नहीं । बच्चे तीन दिन से भूखे है । ऐसे मे मधुलि को लोगों की कितनी सारी बाते सहनी पडती है । पंडित भी उसे पिंडदान न करने पर कलजुगी औरत कहते है । फटटपर नक छिडकते हुए उसे बेशरम, बेहया, छिनाल, कुलंच्छना तक कहते है । मधुलि को मजबूर होकर अपने कानों पर हाथ रखकर यह सब सुनना पडता है । क्योंकि मधुलि विवश थी, उसके पास कुछ भी नहीं था । अंत मे उसने रात के अंधेरे में गंगा के किनारे बच्चो को सथ लेकर डुबे सूरज को जलधार चढाई, माटी का पिंडदान दिया, माटी की गडु की पुँछ थामकर गोदान कर दिया ।"हे गंगा माई, तू ही देखना ! तू ही विचार करना ! ओ अनंत..... ओ अंतरयामी ..... । तू ही ..... तू ही..... ई मधुलि ने अपने कॉपते हुए हाथ जोडते हुए माटी की गैया के खुर पर माथा टिका दिया ।"7

इस प्रकार जोशीजीने तरपन इस कहानी में दरिद्रता मनुष्य को क्या कुछ सहने के लिए मजबूर करती है । इसका चित्रण इस कहानी में किया है ।

हिमांशु जोशी जी की मनुष्य चिन्ह नामक कहानी में एक असहाय बाल विधवा का चित्रण हुआ है गोविंदी नामक बाल विधवा जो अनाथ है तथा उसके घरमे बुढे बाप के अलावा और दुसरा कोई नहीं है । अकेली बाल विधवा को देखकर पुरा गॉव उसका यौन शोषण करता है । गोविंदी पर यह इल्जाम लगाया जाता है कि उसके साथ गॉव के किरपुआ नामक आदमी ने शरम बात की है । इसकी जॉच पडताल के लिए पटवारी आते है ।वह मामले की जानकारी लेने हेतु नकशा तैयार करने के लिए गोविंदी को एकांत मे साथ लेकर जानवरों के रीते बाडे मे जाते है । पूँछ–ताछ के बहाने पटवारी उसे छुता है । जब किरपुआ साला यहॉ आया तो तुम कहॉ पर खडी थी ? अंधियारे बाडे में पटवारी की आवाज गुँजी । उसके दोन कदम पीछे ही गोविंदी खडी थी । वह प्याल की देरी के पास जाकर कहता है कि "हॉ, तो तुम कहॉ पर खडी थी? तो उसने फिर तुम्हे किस तरह पकडा लालटेन धीमी कर उसे एक और रखकर .... वह इस तरह से इस छोटेवाले दरबे से कुदा होगा न ?वह बिल्ले की तरह नीचे कुदता है। वह झप्प से गोविंदी को पिछे से पकड कर प्याल की देरी पर लिटा लेता है ।वह मुँह भीचे चुप पडी रहती है कुछ क्षण बाद पटवारी अपने कपडों पर लिपटी घास झाडता हुआ उठता है ।"8

इसी तरह तहकीकात के बहाने पंच–सरपंच, पेशकार बारी–बारी से पूँछताछ करते है । बुढा पेशकार गोविंदी को अकेले में अपने कमरे में बुलाकर उसके सूखे बालों में हाथ फेरते हुए पुछता है "बता न बिटिया, उस कमीने ने कौन सी हरकत की थी ? ..... कब ... किस तरह से ..... ? कितनी बार ..... ? वह उसे और पास खींचकर हर तरह से उसे सहलाने लगता है । सरपंच कमीने ने भी तेरे साथ जुल्म किया । लोग कहते है बदजात पटवारी ने भी ..... सरकार को सब पता चल गया है । ..... उसको काला पानी की सजा होगी । ..... सरकार उससे नाराज है । हम नाराज है । सब नाराज है ..... मोची से उसकी खाल उतरबा कर उसमें भुसा कर देंगे । ..... और तुझे इनाम देंगे ..... तु बहुत

Issue XXV (25) , Vol. I | Peer Reviewed | ISSN : 2319 - 8648
Dec. 2020 | SJIF Impact factor | Impact Factor : 7.139

अच्छे साल – चलन की है । तू गउ है ..... तू बहुत अच्छी गउ है । ..... बहुत ही अच्छी ..... । पेशकार की सांस रुक जाती है ..... वह उसे पुरी तरह से समेटकर उस पर गिर पडता है ..... आमतौर पर यह यौन शोषण की कहानी है । यह संदर्भ यौन शोषण का ही है किंतु पुरे गॉव की तहकीकात से यौन आवेगो के दमन के साथ जुडे हुए चोरी छिपे पंच–सरपंच, पटवारी, पेशकार के यौन संतुष्टि के प्रसंग भी उभरकर सामने आते है इसी के साथ प्रशासनिक हृदय हीनता का प्रश्न खडा होता है । इसके अलावा इससे भी बडा सवाल यह उठता है कि क्या एक सुंदर जवान नारी देह के साथ यौन संबंध के अलावा और दुसरा कोई संबंध नही हो सकता है । क्या समस्त मानवीय संबंध केवल नाभी के नीचे के एक अंग तक ही सीमित होकर रह गए है ।

प्रस्तुत कहानी से यह लगता है कि पुरा का पुरा गॉव यौन शोषण और प्रशासनिक दमन से उपर नही उठ पाता । साथ ही शोषण का शिकार औरत भी यह सब चुपचाप सह लेती है । नहीवह इसका विरोध करती है नही मुक्ति के लिए घटपटाती है । जैसे कि उसने हालात से समझोता लिया है ।

संदर्भ :

1. मुंशी प्रेमचंद – कुछ विचार, पृष्ठ क.65
2. साहित्य का श्रेय और प्रेय – जैनेंद्रकुमार , पृष्ठ क.312
3. परिशोध भाग – 38 , मार्च 1984 – मैथिली भारद्वाज, पृष्ठ क.6
4. साहित्यिक निबंध – डॉ.गणपती चंद्रगुप्त, पृष्ठ क.3
5. साहित्य दर्पण – आ. विश्वनाथ, पृष्ठ क.7
6. 51 कहानियॉ /तरपन / हिमांशु जोशी, पृष्ठ क.329
7. 51 कहानियॉ /तरपन /– हिमांशु जोशी, पृष्ठ क.339
8. 51 कहानियॉ /मनुष्यचिन्ह / –हिमांशु जोशी, पृष्ठ क.304
9. 51 कहानियॉ /मनुष्यचिन्ह /– हिमांशु जोशी, पृष्ठ क.308–9